(iv) Repairs Lingaraj temple, Bhubaneswar.

SHRIMATI JAYANTI PATNAIK (Cuttack) : The Lingaraj temple at Bhubaneswar, Orissa, is an ancient monument and is a major tourist attraction in the State. Besides, it is symbolic of the age old custom and tradition of Orissa. The archaeological survey of India has taken over the maintenence of this temple as per an agreement with the Trust Board. Unfortunately, Archaeological Survey has been neglecting the maintenance work under some plea or other. They do not allow the temple authority to carry out any work inside the Complex. The temple is visited by thousands of pilgrims and tourists. The first and foremost requirement, therefore, is the maintenance of cleanliness in the complex. Constant increase in the number of pilgrims and visitors has resulted in corresponding increase in the demand of Mahaprasad. But as there is no dining space in the complex, the pilgrims are compelled to eat the Mahaprasad in any vacant space inside the complex making it dirty and unhygienic. Most of the structures, particularly Bhubaneswari temple, Dakshina Chara, Ganesh temple, Bhoga Mandap etc. have not been maintained. The main temple, of Lord Lingaraj and the temple of Goddess Parvati need immediate repair.

In view of the above, I request the Government of India to given permission to the temple management for the construction of Anand Bazar for selling and eating Mahaprasad. The repair works should be started by the new Archaeological Circle, Bhubaneswar, without any further delay.

(v) Providing more amenities to doctors in rural areas.

श्रीमती ऊषा वर्मा (खेरी) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं नियम 377 के अन्तर्गत निम्नलिखित विषय की ओर सरकार का ध्यान दिलाती हूं :

डाक्टरों की शिक्षा पर सरकार लाखों रुपए प्रतिवर्ष खर्च करती है परन्तु डाक्टर बन जाने पर वे सदैव यही प्रयत्न करते हैं कि उनकी नियुक्ति बड़े-बड़े शहरों में हो। वे लोग बेकार रहना पसन्द करते हैं परन्तु गांवों में जा कर काम करना पसन्द नहीं करते। उसका कारण यह है कि गांवों में उनके रहने के लिए मकानों की सुविधाएं हैं न उनके नीचे काम करने के लिए कम्पाउन्डर और न नर्स ही होते हैं। दवाइयों की बात ही क्या है ?

यह स्थिति केवल हमारे लिए उ०प्र० या मेरी कांस्टीट्यूएंसी की ही नहीं सारे देश की है। ग्रांमों में कोई भी डाक्टर जाना नहीं चाहता और डाक्टरों के अभाव में रोगी असमय पर बिना दवाई के मर जाते हैं। डाक्टर गांवों में जा सकते हैं परन्तु जाते नहीं क्योंकि शहरों की भांति ग्रामीण क्षेत्रों में डाक्टरों को सुविधाएं उपलब्ध करा दी जाएं तो डाक्टर ग्रामीण क्षेत्रों में जाने से नहीं कतराएंगे।

अत: सरकार से निवेदन है कि शहरों की भांति ग्रामों में भी उनके लिए सुविधााएं दी जाएं तथा हर डाक्टर के लिए ग्रामों में कुछ साल नौकरी करना आवश्यक कर दिया जाए।

(vi) Dovelopment of Pilibhit District of Uttar Pradesh.

श्री हरीश कुमार गंगवार (पीलीभीत) : उपाध्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश का पीलीभीत जिला जो मेरा निर्वाचन क्षेत्र भी है, औद्योगिक दृष्टि से सबसे पिछड़ा क्षेत्र है। केन्द्रीय सरकार का कोई उद्योग इस क्षेत्र में नहीं लगा है। पीलीभीत जिला व शाहजहांपुर की पुवायां तहसील प्रदेश के सबसे अधिक गेहूं व धान के उत्पादक क्षेत्र हैं। इसके बाद भी उद्योग-रहित